अच्छी लड़की-
संजीव जैन

एक साँचे में,मत ढलना तुम।
अच्छी लड़की,मत बनना तुम।
आँखें खोल के,एक पल देखो,
यह क्या, हाल बनाया तुमने।
अच्छी लड़की, बन कर भी,
क्या पाया तुमने।

दुनिया में आने पहले,
जब तेरी आहट आयी थी,
शर्माती माँ ने सबको जब,
आने की ख़बर सुनाई थी।
एक बिजली सी चमकी थी,
चिंता की लकीरें माथे पर।
दादा ने पसीना पोंछा था,
दादी मन में घबरायी थी।
फिर बातों ही बातों में,
अम्माँ को तेरी मनाया था।
बेटी के आने का मतलब,
सीधे- सीधे समझाया था।
माँ तो कुछ बोल नहीं पायी,
बस नयनों नीर बहाया था।
तब साम, दाम, दंड, भेद सहित,
हर तीर वहाँ आज़माया।

कभी आइने से पूछो,
क्या हाल बनाया तुमने।
अच्छी लड़की बन कर भी,
क्या पाया तुमने।

जब गुड़िया की उम्र थी तेरी,
चूल्हा चौंका तुझे सिखाया।
छीन किताबें हाथ से तेरे,
झाड़ पोंछा तुझे थमाया।
भाई गये शहर में पढ़ने,
घर के भीतर तुझे बिठाया।
भारी बोझ है जैसे कोई,
अपनों ने ही सदा जताया।
किसी और की बता अमानत,
बार - बार बस किया पराया।
आँख झुका घर से जब निकली,
नज़रों ने शिकार बनाया।
फबती- ताने हर नुक्कड़ पर,
बस नयनों में दर्द छिपाया।
काँट छाँट कर तन मन तेरा,
अच्छी लड़की तुझे बनाया।

आगे पीछे देख बताओ,
चुप रह कर भी,
क्या कुछ भी समझाया तुमने।
अच्छी लड़की बन कर भी,
क्या पाया तुमने।

तेरी हर क़ुर्बानी का,
महिमामंडन किया सभी ने।

बातों में बहला कर बेशक,
पूर्ण विखंडन किया सभी ने।
हर युग में तुम बिकती आयी,
लुटती आयी, मिटती आयी।
लेकिन निर्लज्ज कोई सभ्यता,
इस शाजिश पर क्या शर्मायी।
सपने तेरे, जीवन तेरा,
कब का माँगें नया सेवेरा।
लेकिन सब कुछ स्वयं गँवा कर,
ज़िल्लत को ही भाग्य बता कर।
अंधेरों को गले लगाये,
सदियों श्रापित धूम रही है।
कौन आयेगा तुझे बचाने,
तूं ही बता, क्या ढूंड रही है।

शब्द , अर्थ और भाषा बदलो,
अच्छे की परिभाषा बदलो।
आँख उठा, देखो दुनिया को,
सपने बदलो, आशा बदलो।
तथाकथित अच्छेपन का,
तानाबाना अपनाया तुमने।
महारथियों के मकडजाल में,
हर युग जन्म गँवाया तुमने।

तुम्हीं बताओ,
अच्छी लड़की बन कर भी,
क्या पाया तुमने।